राग विलावर

कहा भयो जो मुखथें कह्यो, जब लग चोट न निकसी फूट।
प्रेम बान तो ऐसे लगत हैं, अंग होत हैं टूक टूक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि ऐसी वाणी का क्या लाभ जो कही जाए और आत्मा को चोट न लगे। प्रेम-बाण तो ऐसे चुभते हैं जो अंग के टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं (अर्थात् तन की सब चाहना मिट जाती है)।

मुख के सब्द मैं बोहोत सुने, इन भी कोई दिन किया पुकार।।
पर घायल भई सो तो कोईक कुली में, सो रहत भवसागर पार।। २ ।।

दूसरों को रास्ता बताने वाले बहुत से ज्ञानियों को मैंने सुना। इस कलियुग में बहुत दिनों तक उन्होंने तरह-तरह से पुकार की, परन्तु इससे चोट उन्हीं को लगी जो भवसागर से पार परमधाम में रहने वाली ब्रह्मसृष्टि है।

वाको आग खाग बाघ नाग न डरावें, गुन अंग इन्द्री से होत रहित।
डर सकल सांमी इनसे डरपत, या विध पाइए प्रेम परतीत।। ३ ।।

ऐसी ब्रह्मसृष्टियों को अग्नि, गिद्ध, शेर, नाग नहीं डरा सकते, क्योंकि वह अपने गुण, अंग, इन्द्रियों के अधीन नहीं होते। वह तो अपने पिया के प्रेम में इस तरह से मग्न होते हैं कि संसार के सारे भय उनसे डरते हैं।

लगी वाली और कछू न देखे, पिंड ब्रह्मांड वाको है री नाहीं।
ओ खेलत प्रेमे पार पियासों, देखन को तन सागर माहीं।। ४ ।।

जिस आत्मा को पारब्रह्म से लगन लग जाती है उसे फिर पिण्ड और संसार की सुध नहीं रहती। उसका तन संसार में देखने को ही दिखता है, पर वह तो अपने प्रीतम के प्रेम में डूबी रहती है।

जो कोई ऐसे मगन होए खेले प्रेम में, तो या विध हमको है री सेहेल।
पर पीवना प्रेम और मगन न होना, ए सुख औरों हैं मुस्किल।। ५ ।।

इस तरह से पिया के प्रेम में मगन होकर खेलना ब्रह्मसृष्टियों को बड़ा सरल है, क्योंकि वह प्रेम के पात्र हैं। प्रेम प्राप्त कर माया में लिप्त न होना दूसरों के लिए बड़ा कठिन है।

ए जिन कारन किया है कारज, सो ढूंढों सैयां जो पिया ने कही।
न तो अबहीं मगन होए खेलों प्रेम में, तब तो देखन कहन सुनन तें रही।। ६ ।।

यह खेल जिन ब्रह्मसृष्टियों के लिए बनाया है उन्हें ढूंढ़ो, ऐसा पिया ने कहा है। वरन् प्रेम में मैं मगन हो जाती तो फिर देखने, सुनने और कहने की कोई बात ही न रहती।

देखन को हम आए री दुनियां, हमहीं कारन कियो ए संच।
पार हमारे न्यारा नहीं, हम पार में बेठे देखे प्रपंच।। ७ ।।

हम इस दुनियां को देखने के लिए आए हैं और हमारे लिए ही यह दुनियां बनी है। हमसे पारब्रह्म जुदा नहीं है। हम घर में बैठे-बैठे ही इस प्रपंच (झूठ के सागर) को देख रहे हैं।

Nijanand App

जिन बांधे हैं भवन चौदे, सो नार हमसे रहत है न्यारी।
दुःख में बैठी सुख लेवे महामति, पार के पार पिया की प्यारी।। ८ ।।

जिस माया ने चौदह लोकों को बनाया है वह हमसे दूर रहती है। श्री महामतिजी कहते हैं कि हम इस दुःख के खेल में बैठ करके भी अपने अखण्ड घर के सुख पिया की प्यारी अंगना होने के कारण लेते हैं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ८९ ।।

राग श्री केदारो

सुनो भाई संतो कहूं रे महंतो, तुम अखंड मंडल जान पाया।
वैष्णव बानी पूछों गुर ग्यानी, ऐसा अंधेर धंधा क्यों ल्याया।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सन्तो! महंतो! सुनो, तुमने अखण्ड गोकुल की पहचान कैसे की? हे वैष्णवो! अपने गुरुओं और ज्ञानियों से पूछो कि वह ऐसा उल्टा रास्ता बताकर दुनियां को क्यों भरमा रहे हैं?

जिन गोकुल को तुम अखंड कहत हो, सो तुमारी दृष्टें न आया।
सुक जी के वचन में प्रगट लिख्या है, पर तुमको किने न बताया।। २ ।।

जिस गोकुल को तुम अखण्ड कहते हो, उसकी तो तुम्हें पहचान ही नहीं है। शुकदेवजी के वचनों में यह स्पष्ट लिखा है, पर तुम्हें कोई बताने वाला नहीं मिला कि वह अखण्ड गोकुल कहां है?

जाको तुम सतगुर कर सेवो, ताको इतनी पूछो खबर।
ए संसार छोड़ चलेंगे आपन, तब कहां है अपनों घर।। ३ ।।

जिसको तुम सतगुरु समझकर सेवा कर रहे हो, उनसे इतना पूछो कि जब हम इस संसार को छोड़कर चलेंगे तो मूल घर कहां है, जहां जाना होगा।

सब्द की वस्त सो तो महाप्रले लीनी, और ठौर बताओ मोही।
जाको सुध न आप और घर की, क्यों पार पावेगा सोई।। ४ ।।

यहां के शब्दों में जिसका वर्णन किया है वह तो महाप्रलय में नष्ट हो जाने वाला है। तो फिर जिसे अपनी और अपने घर की सुध नहीं है ऐसे सतगुरु के ज्ञान से कोई कैसे भवसागर से पार उतरेगा?

कोई आप बड़ाई अपने मुख थें, करो सो लाख हजार।
परमेश्वर होए के आप पुजाओ, पर पाओ नही भव पार।। ५ ।।

अपने मुख से अपनी ही बड़ाई भले करोड़ों बार करो तथा स्वयं परमेश्वर बनकर अपनी पूजा कराओ, परन्तु भवसागर से पार न जा पाओगे।

कोई सुध न पावे याकी, ऐसी माया सपरानी।
आपे प्रभु आपे सेवक, मांझे-मांझ उरझानी।। ६ ।।

यह मायाजाल यहां ऐसा फैला है कि किसी को इससे निकलने की सुध ही नहीं है। इसके अन्दर यहां के जीव ही परमात्मा हैं और जीव ही सेवक हैं। इस तरह से दोनों आपस में इस मायाजाल में उलझे पड़े हैं।

Nijanand App